Vol 7 Issue 3 April 2017

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 IMPACT FACTOR : 5.1651(UIF) VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | APRIL - 2017

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

आठ से बारह वर्ष के बच्चों का शिक्षण

डॉ. दिनेश प्रसाद साह
एसोसिएट प्रोफेसर सह अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
सी.एम.साइन्स कॉलेज, दरभंगा.

प्रस्तावना

इस अवस्था की विशेषताओं का ज्ञान शिक्षण के लिए आवश्यक है। इस अवस्था में बच्चों के शारीरिक विकास में पहले की अपेक्षा कुछ स्थिरता आ जाती है। किन्तु दस या बारह वर्ष की आयु से उनका शारीरिक विकास फिर तीव्रग्रति से होने लगता है। लड़कियों में यह विकास लड़कों की अपेक्षा एक दो वर्ष पहले होता है। श्रवण तथा दृष्टि–इन्द्रियों का पूर्ण विकास आठ नौ वर्ष तक हो जाता है पर इन पर अधिक जोर देना उचित नहीं है। अतः बच्चों की पुस्तकों के अक्षर कुछ बड़े रहें तो ठीक है। तारत्व विवेक (Pitch Discrimination) का विकास ग्यारह वर्षों तक क्रमशः होता है। हस्त निपुणता नौ वर्षों तक हो जाती है। शब्दों की रटन–स्मृति का विकास क्रमशः आठ वर्षों तक होता है। अंकों की स्मृति का विकास चौदह–पन्द्रह वर्षों तक होता रहता है। इसके बाद इन योजनाओं में कोई विशेष वृद्धि नहीं होती। गद्य तथा पद्य के स्मरण का विकास प्रौढ़ अवस्था तक होता रहता है। कुछ व्यक्तियों की यह धारणा है कि इस अवस्था में स्मृति अधिक तीव्र रहती है। किन्तु इस विश्वास के समर्थन में वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं मिले हैं। संभवतः इस अवस्था में बच्चों का ध्यान अन्य कार्यों की ओर कम रहता है। जैसे–जैसे आयु की वृद्धि होती है, वैसे–वैसे व्यक्ति की उलझनें बढ़ती हैं और वह किसी विषय का स्मरण उतना ध्यानमग्न होकर नहीं कर पाता। इस धारणा का एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि बचपन में व्यक्ति किसी पाठ के स्मरण में अधिक समय देते हैं। उतना समय प्रौढ़ अवस्था में देना कठिन होता है। अतः इस अवस्था में अधिकतर बच्चे पहाड़ा, भूगोल, इतिहास, कविता, आदि रटने में कुशल प्रतीत होते हैं। बच्चों के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह विदित है कि प्रौढ़ व्यक्तियों की भाँति बच्चे भी अर्थयुक्त रूचिकर पाठ का स्मरण शीघ्र कर लेते हैं।

इस अवस्था में बच्चों में चिंतन की प्रक्रिया भी होती है। पर उनके अनुभव तथा शब्द भण्डार सीमित रहते हैं। अतः उनका अधिकतर चिंतन मूर्त्त होता है। अमूर्त्त चिंतन की क्षमता कम रहती है। उनमें आगमनात्मक से पहले निगमनात्मक चिंतन का विकास होता है।

इस अवस्था के बच्चों की अभिरूचि का भी अध्ययन किया गया। उनकी अभिरूचि अत्यंत चंचल तथा परिवर्तनशील रहती है। स्कूल के विषयों की ओर अभिरूचि विषय के शिक्षकों तथा विषयवस्तु पर निर्भर होती है। यदि किसी वर्ग के छात्र इतिहास में अधिक अभिरूचि व्यक्त करता है तो यह आवश्यक नहीं है कि दूसरे साल भी वह इतिहास में अधिक अभिरूचि व्यक्त करेगा। दूसरे वर्ष इतिहास में उसे सबसे कम अंक मिल सकते हैं और भूगोल में वह सबसे अधिक अंक प्राप्त कर सकता है। बच्चों की अभिरूचि में ऐसे परिवर्त्तन शिक्षक के परिवर्त्तन या छात्र के परिश्रम पर निर्भर होते हैं। कभी–कभी छात्र जिस विषय में अधिक अंक प्राप्त करते हैं उसके अध्ययन की ओर कम ध्यान देते हैं तथा जिस विषय में उन्हें कम अंक मिलते हैं, उसकी ओर अधिक ध्यान देते हैं।

स्कूल के किसी विषय के प्रति छात्रों की अभिरूचि विषयवस्तु पर भी निर्भर होती है। भूगोल का अध्ययन कुछ छात्र तब तक पसंद कर सकते हैं जब तक उन्हें मानचित्र बनाने का अभ्यास कराया जाता है किन्तु जब उन्हें आयात तथा निर्यात की वस्तुओं को स्मरण करने के लिए कहा जाता है तब संभवतः वे उसमें उतनी अभिरूचि न व्यक्त करें। शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव भी विभिन्न विषयों में छात्रों की अभिरूचि का निर्धारण करता है। यदि छात्र किसी शिक्षक के स्वभाव को पसंद करते हैं तो वे उसके शिक्षण के विषय को भी पसंद करने लगते हैं।

बच्चों में पढ़ने के प्रति रूचि जगाना अत्यावश्यक है। पढ़ाना केवल बौद्धिक अनुभव नहीं है। उसके द्वारा भावात्मक अनुभवों की भी प्राप्ति होती है। पढ़ने से हास्य, रूचि, प्रसन्नता, उत्साह और महत्वाकांक्षा का विकास होता है ''दैनिक जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में जीवन–यापन के स्तर और स्वास्थ्य को उन्नत करने, नागरिकता के विकासशील भाव की प्राप्ति एवं समस्त लोगों के कल्याण के निमित्त कार्य करने की उत्सुकता संसार को समझने की व्यापकता प्रदान करने, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को व्यापक करने, धार्मिक आवश्यकताओं की संतुष्टि तथा प्रेरणा हेतु पढ़ना बहुत उपयोगी है।''(1) अतः यह निर्विवाद है कि जीवन को आनंदमय बनाने में पुस्तकों का सर्वाधिक महत्त्व है।

आकर्षक एवं रंगबिरंगी पुस्तकों के प्रति बच्चों की स्वाभाविक रूचि होती है। प्रारंभ में बच्चे केवल उन चित्रों को देख–समझ कर ही खुश होते हैं, फिर जैसे–जैसे उन्हें अक्षर और शब्द का ज्ञान होता है, वे उनकी ओर निरंतर आकर्षित होते जाते हैं।

बालसाहित्य को इतना महत्त्व इसी शताब्दी में दिया गया है। पहले बच्चों के लिए इतनी अधिक छपी हुई पुस्तकों का संसार नहीं था। परन्तु अब बच्चों के अपने अखबार, मासिक, साप्ताहिक प्रकाशित होने लगे हैं। अब इस बात की आवश्यकता होने लगी है कि बालक को इस योग्य बनाया जाय

कि वह केवल शब्दों को पढ़े ही नहीं बल्कि उन्हें समझे भी। बच्चे ऐसी पुस्तकों को पढ़कर न केवल प्रसन्न होते हैं, अपितु संतुष्ट भी होते हैं– कारण इनमें उनके विचारों के अनुकूल बातें होती हैं। बच्चे उन्हीं पुस्तकों को बार–बार पढ़ते हैं– जिन्हें वे पसंद करते हैं और वे बालसाहित्य की कसौटी पर खरी उतर सकती है। अपनी पसंद की इन पुस्तकों में बच्चे जीवन के शाश्वत सत्य को भले ही पूरी तरह न पहचान पाएँ पर उन्हें इतना अवश्य भान हो जाता है कि वह सत्य इस साहित्य के गर्भ में छिपा है।

सर्वप्रथम प्रत्येक पुस्तक अपने रूप–रंग का एक निश्चित प्रभाव बच्चों के मन पर डालती है फिर उसके बाद उसका वर्ण्य–विषय प्रभावित करता है। अनेक बार देखने को मिलता है कि रूप–रंग आकर्षक न होने पर अथवा वर्ण्य–विषय रोचक न होने पर भी पुस्तक असफल हो जाती है। अतः बालसाहित्य–रचना एक बड़ी कला है। यह एक ऐसा निष्ठापूर्ण कार्य है, जिसमें थोड़ी भी कमी आ जाती है तो वह निरर्थक सिद्ध होता है। सच तो यह है कि प्रकाशक का यह वह क्षेत्र है जहाँ प्रकाशक, लेखक एवं चित्रकार–सब को समान रूप से जागरूक रहना पड़ता है। इनमें से किसी के कमजोर पड़ने पर प्रकाशन के असफल होने का खतरा रहता है। इसलिए बालसाहित्य का प्रकाशन अन्य प्रकाशनों से भिन्न योजनाबद्धता की भी सर्वाधिक अपेक्षा रखता है। बालसाहित्य के प्रकाशकों को यह भूला देना चाहिए कि वे व्यवसायी हैं। उन्हें यह मानकर बालपुस्तकों को प्रकाशित करनी चाहिए कि वे पिता हैं और अपने बच्चों को संस्कार का सांचा देने जा रहे हैं। अपनी भावना को इस ऊँचाई पर ले जाकर यदि वे प्रकाशन का कार्य करेंगे तो सिद्धान्त और नैतिकता की कसौटी पर वे खरा उतर सकते हैं।

बालसाहित्य की सफलता :

बालसाहित्य की सफलता के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है– जैसे मनोरंजकता और सरसता उसका पहला गुण है। पहले हिंदी में उपदेशात्मक और नीतिपरक कहानियों को बालसाहित्य के रूप में जाना जाता था। वस्तुतः यह कार्य 'बड़े लेखकों' का था जो बच्चों पर अपने मन की बातें लादना चाहते थे। उन्हें इसकी चिन्ता न थी कि बच्चे का मन क्या चाहता है और क्या वे उनकी दी हुई बातें स्वीकार कर रहे हैं? चौथे दशक की बालकहानियों में ''झूठ बोलना पाप है'', ''सदा सच बोलो'', ''धोखा देना अधर्म है'', ''घमण्डी का सिर नीचा होता है'', आदि वाक्य अधिकांश कहानियों के अंत में होना अनिवार्य माना जाता था। ऐसी कहानियों को पढ़ने के बाद की वही स्थिति होती थी, जो स्वादिष्ट भोजन के अंतिम ग्रास में किरकिरापन आ जाने पर होती है। आज भी यही, ऐसी स्थिति, ऐसी कहानियों को पढ़ने पर होती है। अतः प्रत्येक प्रभाव डालने वाली उपदेशात्मक तथा नीतिपरक कहानियाँ अधिक प्रभावित नहीं कर पातीं।

छोटे बच्चे को परियों की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं, कारण ये कहानियाँ इन्हें ऐसे लोक में ले जाती हैं; जहाँ परी और उसके अलावा कोई नहीं होता। वे अपने असंभव कार्यों को संभव बनाने की बात परियों से करवाने की सोचते रहते हैं। पर जैसे–जैसे बालकों की कल्पनाशक्ति विकसित होती जाती है, वे निराधार कल्पनाओं को छोड़कर यथार्थ की ओर प्रवृत्त होने लगते हैं। उन्हें जब यह पता हो जाता है कि परी कुछ नहीं होती है, जो कुछ करना है वह स्वयं ही करे, तो वे अधिक क्रियाशील और साहसिक हो जाते हैं। वे कठिनाइयों को झेलने और कठिन कार्यों को करने में विशेष रूचि लेने लगते हैं। उन्हें सिन्दबाद जहाजी, रॉबिनसन क्रूसो, डेविस कॉपरफील्ड आदि की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। इन कहानियों के माध्यम से उनका न केवल कौतूहलपूर्ण मनोरंजन होता है, बल्कि वे जीवन के संघर्षों तथा कठिनाइयों से जूझने के लिए साहस का मूलमंत्र भी अनजाने में ही ग्रहण कर लेते हैं। वे ऐसी कहानियाँ पढ़ते–सुनते समय स्वयं को रॉबिनसन क्रूसो या डेविड कॉपरफील्ड समझ बैठते हैं। इस अवस्था को पार करते ही साहस और वीरता की कहानियों में भी बच्चे रूचि लेने लगते हैं। साहसिक और वीर पात्रों की ऐतिहासिक और काल्पनिक दोनों प्रकार की कहानियाँ उन्हें विशेष आनन्द प्रदान करती हैं। वीर शिवाजी की माता जीजाबाई ने उन्हें बचपन में ऐसी कहानियाँ सुनाया करती थीं और इन कहानियों के प्रभाव एवं संस्कार ने उन्हें इतना कर्मठ और साहसिक योद्धा बनाया। नैतिक बल को बढ़ावा देने वाली कहानियाँ भी इसी समय उपयोगी होती हैं। आविष्कारकों, नेताओं तथा महान् पुरुषों की जीवन–कथाएँ अपने बालपाठकों के समक्ष एक स्वरूप प्रस्तुत करती हैं, जिससे प्रेरित होकर ही वे अपने भविष्य की कल्पना करते हैं।

इस तरह कहा जा सकता है कि बच्चों के लिए कहानियाँ उनके मानसिक विकास के लिए तो उपयोगी है ही यदि इस मनोवैज्ञानिक आधारभूमि को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखी जाएँ तो वे अधिकाधिक प्रभावकारी सिद्ध होंगी।

बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति जबर्दस्त होती है, और इसके द्वारा वे जीवन के बहुत–से उपयोगी कार्य सीखते हैं। बच्चों के लिए नाटकों की उपयोगिता इसी मनौवैज्ञानिक तथ्य से पुष्ट होती है। वे कौतुहल प्रिय होते हैं, अतः जितनी विचित्रता, जितना कौतूक आप वाह्य जीवन में उनके समक्ष प्रस्तुत करेंगे उतना ही अधिक उनके जीवन को प्रभावित कर सकेंगे, उतना ही अधिक वे अपने भावी जीवन के निर्माण के लिए सामग्री प्राप्त कर सकेंगे। नाटक देखते समय बच्चों का प्रत्यक्ष ज्ञान बहुत जाग्रत होता है, इस कारण इन घटनाओं का बालमन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। महात्मा गांधी के बालमन पर 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक का बहुत प्रभाव पड़ा था। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''यह नाटक देखने से मेरी तृप्ति ही न होती थी। उसे बार–बार देखने को जी चाहता था, पर बार–बार देखने कौन देता? किन्तु अपने मन में इस नाटक को सैकड़ों बार दोहराया गया। हरिश्चन्द्र के सपने आया करते। हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी सब क्यों नहीं हो पाते? यही धुन रहती। हरिश्चन्द्र पर जैसी विपत्तियाँ पड़ी थीं, वैसी विपत्तियों को भोगना और सत्य का पालन करना ही वास्तविक सत्य है। मैंने तो मान लिया था कि नाटक में लिखी विपदाएँ हरिश्चन्द्र पर अवश्य पड़ी होंगी। हरिश्चन्द्र का दुःख देखकर, उसे याद करके, मैं खूब रोया हूँ। आज मेरी बुद्धि समझती है कि हरिश्चन्द्र कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं थे। फिर भी मेरे मन में हरिश्चन्द्र और श्रवण आज भी जीवित हैं।''(2) नाटकों का विशेष महत्त्व इसलिए माना जाता है कि उनके द्वारा मनोरंजन और जीवन की सम्यक अभिव्यक्ति साथ–साथ हो जाती है।

छन्दोबद्ध कविताओं अथवा तुकान्त गीतों के प्रति बच्चों की अधिक रूचि होने के कारण इन्हें जल्दी याद कर लेते हैं अर्थात संगीतात्मकता एवं गेयता इन्हें अधिक आकर्षित करती हैं। छोटे–छोटे बच्चे अपने आसपास के पत्तों से संबंधित छोटे गीतों को बहुत पसंद करते हैं वे इन्हें सुगमता से याद कर खेल–खेल में दुहराते हैं। कई बार बच्चे अपने उन पात्रों को देखकर ही जोर–जोर से वह गीत गाने लगते हैं। उदाहरण के लिए।

''मछली जल की रानी है।
जीवन उसका पानी है,
हाथ लगाओ डर जाएगी
बाहर निकालो मर जाएगी।''(3)

कविताओं एवं गीतों की लयात्मकता, संगीतात्मकता एवं भावपूर्णता ही बच्चों को अन्य विषयों की ओर आकर्षित करती हैं। स्वर्गीय मैथिली शरण गुप्त की कविता ''माँ कह एक कहानी'' बहुत लोकप्रिय रही।

बच्चे जैसे–जैसे बढ़ते हैं, वे कल्पना जगत से निकलकर यथार्थ में प्रवेश करते हैं। उन्हें प्रेम, प्रकृति–प्रेम, ईश्वर–वरदान तथा अन्य सामाजिक विषयों से संबंधित कविताएँ अच्छी लगने लगती हैं। स्वर्गीया सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता ''झांसी की रानी'' आज भी बच्चों को बहुत अच्छी लगती है।

इस कविता को पढ़कर उनकी सुषुप्त शिराओं में उष्ण रक्त का संचार होने लगता है और अपने शत्रुओं को नाको चने चबा देने के लिए मानों कृतसंकल्पित हो उठते हैं:–

''सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बुढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबसे पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सन्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।''(4)

पंडित रामनरेश त्रिपाठी की 'प्रार्थना' आज भी बच्चों में आध्यात्मिक भावना का स्वतः ही संचार करती है और बच्चे उसे याद कर दुहराते रहते हैं :–

''हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों से दूर हमको कीजिए
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक वीर, व्रतधारी बनें।''(5)

इस छोटी सी कविता में कवि ने बाल मन की सभी नैतिक अभिव्यक्तियों को शब्द प्रदान करते हुए इसे लयात्मक तथा गेय बनाया है। इनमें उन सभी बातों का समावेश भी है जो एक आदर्श मानव के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार देशभक्ति, सामाजिक जीवन तथा खेल–कूद आदि से संबंधित गीत बच्चों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं। बच्चों की प्रकृति, मनोवृत्ति एवं रूचि को ध्यान में रखकर लिखे गये गीत बच्चों के लिए अधिक आकर्षक एवं सुगमता से ग्राह्य होते हैं।

अतः बालसाहित्य एवं बाल–मनोविज्ञान का अन्योन्याश्रित संबंध है। बाल– मनोविज्ञान की आधारभूमि से हटकर लिखे गये साहित्य की कोई भी विधा के लिए उपयोगी शिक्षाप्रद एवं प्रभावशाली नहीं हो सकती और अपने लिए उपयोगी साहित्य की सबसे बड़ी कसौटी बच्चे स्वयं हैं क्योंकि वे अपनी मनोवृत्ति एवं रूचि के प्रतिकूल लिखे गये साहित्य को नकार देते हैं। अतः वर्त्तमान समय में बालसाहित्य–रचना का मूल आधार बाल–साहित्य है।

सन्दर्भ :

1. Ormiston Mary Brit K. Educational Psychology Pub., 1939, पृ.– 9
2. संक्षिप्त आत्म–कथा, महात्मा गाँधी– पृ.– 10 सस्ता साहित्य मंडल प्रकाश, 1995 संस्करण।
3. शिशु गीत।
4. सुभद्रा कुमारी चौहान–सुधा चौहान, साहित्य अकादमी, 1990 संस्करण।
5. ज्योति बाल भारती–ज्योति प्रकाशन, पटना, पृ.– 3

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org